DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Samkrit
S.R.A.P. College, Rara chakia
BRABU – Muzaffar Pur

B.A. (Hon.) Part – I
Subject – Samkrit
Paper – I

5×3 = 15 Marks

कारक सूत्र - व्याख्या
(चतुर्थी विभक्ति)

19. स्पृहेरीप्सितः (1/4/36)

स्पृह् (इच्छा करना, चाहना) धातु के प्रयोग में इच्छित वस्तु की सम्प्रदान संज्ञा होती है। अर्थात् जिस वस्तु या व्यक्ति के लिए इस धातु का प्रयोग होता है उनमें चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा – सः पुष्पेभ्यः स्पृहयति (वह फूलों की इच्छा करता है) – दीनः धनाय स्पृहयति। भक्तः ज्ञानाय स्पृहयति – यहाँ स्पृह् धातु का प्रयोग है और इच्छित वस्तुएँ हैं - पुष्प, धन एवं ज्ञान, अतः इन तीनों की सम्प्रदान संज्ञा होने से चतुर्थी विभक्ति आयी है। प्रश्न उठता है कि उक्त सूत्र में 'ईप्सित' का ग्रहण क्यों किया? उत्तर है - यदि ग्रहण नहीं करता तो 'पुष्पेभ्यो वने स्पृहयति' (फूलों को वन में चाहता है) – वहाँ 'वन' की भी सम्प्रदान संज्ञा हो जायेगी। कहने पर तो इसलिए नहीं होता है कि वहाँ वन ईप्सित नहीं है अपितु पुष्प है, जिनकी सम्प्रदान संज्ञा होती ही है। यही बात 'वने भक्तः ज्ञानाय स्पृहयति एवं ग्रामे दीनः धनाय स्पृहयति' के साथ भी लागू होता है। यहाँ भी 'ईप्सित' का ग्रहण नहीं होता तो वन और ग्राम - दोनों की सम्प्रदान संज्ञा हो जाती, परन्तु यहाँ वन और ग्राम ईप्सित नहीं है।

क्रमशः जारी